Tender Heart High School, Sec. 33-B, Chd.

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी व्याकरण (लोकोक्ति पर आधारित कहानी)

पुस्तक – आमोद हिंदी व्याकरण-8

प्यारे बच्चो, सुप्रभात।
आज हम कक्षा आठवीं में हिन्दी व्याकरण की पुस्तक में दी गई लोकोक्ति के आधार पर कहानी को पढ़ेंगे। यह कार्य आपको 1 अगस्त, 2024 को भेजा जा रहा है।

बच्चो! मैं अब आपको कुछ लोकोक्ति पर आधारित कहानियाँ पढ़कर सुनाऊँगी। आप सभी इन्हें ध्यान से सुनेंगे। परीक्षा में आपको इन लोकोक्तियों पर आधारित कहानियों में से कोई एक कहानी लिखने को दी जाएगी। इसलिए आपका इन कहानियों का लोकोक्ति के साथ सुनना व समझना अति आवश्यक है।

(क) 'करत – करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान'
प्रस्तुत उक्ति का अर्थ है कि अभ्यास करते रहने से मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन जाता है। जैसे- एक कोमल रस्सी के बार-बार रगड़ खाने से पत्थर पर भी निशान बन जाता है। उसी प्रकार बार-बार अभ्यास करने से मूर्ख भी विद्वान बन सकता है।

प्राचीन समय में बोपदेव नामक एक बालक था। वह पढ़ने में कमज़ोर था। उसका ध्यान पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था और न वह किसी पाठ को याद कर पाता था। इस कारण उसके अध्यापक उसे डाँटते थे। एक दिन उसके अध्यापक ने उसे कहा कि तुम अपने घर लौट जाओ क्योंकि

कक्षा-आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी व्याकरण (लोकोक्ति पर आधारित कहानी)

तुम सिखाई गई विद्या को याद नहीं रख पा रहे हो। सहपाठियों के प्रश्नोत्तर देते समय बोपदेव उनके मुँह ताका करता था। साथी उसे बुद्धू कहकर चिढ़ाया करते थे। इस प्रकार के व्यवहार से कुछ ही दिनों में उसे विश्वास हो गया कि वह मूर्ख है, मंदबुद्धि है, कभी विद्या नहीं सीख सकता।

एक दिन घर जाते समय बोपदेव को प्यास लगी। वह पास के एक कुएँ पर रुक गया। वहीं कुछ ग्रामीण महिलाएँ पानी भर रहीं थीं। उन्हीं में से एक से उसने कहा- "प्यास लगी है, पानी पिला दो।" पानी पीते हुए उसकी दृष्टि कुएँ की जगत पर पड़ी। पत्थर पर पड़े हुए निशान दिखाई दिए। उसने उसी महिला से प्रश्न किया- "पत्थर पर ये निशान कैसे हैं?"

महिला पहले तो मुसकराई, फिर बोली- "अरे बुद्धू! इतना भी नहीं जानता। ये निशान प्रतिदिन रस्सी खींचने की रगड़ से पत्थर पर पड़ गए हैं।"

उत्तर पाते ही बोपदेव के ज्ञान के चक्षु खुल गए। उसे विश्वास हो गया कि जब बारंबार रस्सी के आने-जाने से यह कठोर पदार्थ घिस सकता है तो वह भी नित्य अभ्यास करने से विद्वान बन सकता है।

मन में यह विचार उठते ही वह उलटे पाँव पाठशाला लौट आया। गुरुजी के चरणों में गिरकर बोला- "गुरुदेव! अब मैं आलस्य को त्यागकर ध्यान देकर पढ़ूँगा। पढ़े हुए पाठ को कई-कई बार दोहराऊँगा। साथ ही लिखने का अभ्यास भी करूँगा।"

बोपदेव की बात सुनकर गुरुजी प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे उठाकर गले से लगा लिया। गुरुजी के आशीर्वाद, अभ्यास और लगन से बोपदेव एक दिन विद्वान बन गया। यह सच है —

कक्षा - आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी व्याकरण (लोकोक्ति पर आधारित कहानी)

करत- करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निशान।।

(ख) 'सठ सुधरहिं सत्संगति पाई'

श्रेष्ठ पुरुषों की संगति को सत्संगति कहते हैं। समाज में सदाचारी और दुराचारी दोनों ही प्रकार के लोग होते हैं। बचपन में कोई भी बच्चा बुरा नहीं होता, वह अच्छे परिवार के बीच पलता है और बढ़ता है तो सदाचारी बन जाता है, वही बच्चा संयोग से दुर्जनों के बीच पहुँच जाता है तो चोर और डाकू बन जाता है। परिवार के लोग भी उससे नाता तोड़ लेते हैं।

एक बार एक विदेशी फोटोग्राफर भारत आया। तस्वीरें खींचना उसका पेशा था। एक बाग में एक सुंदर बच्चा कई बच्चों के साथ खेल रहा था। उसकी माँ भी बाग में अपनी सहेलियों के साथ व्यस्त थी। फोटोग्राफर को अपने बच्चे की तस्वीरें लेते देख माँ ने एक तस्वीर उससे माँगी। फोटोग्राफर ने उसका पता लिख लिया और तस्वीर भेजने का वायदा करके चला गया। कुछ समय बाद एक चित्र प्रदर्शनी में उस फोटोग्राफर को उस बच्चे के चित्र पर 'अति सुंदर चित्र' के लिए प्रथम पुरस्कार मिला। फोटोग्राफर ने उस बच्चे के चित्र के साथ उसकी माँ को कई उपहार तथा कुछ पैसे भेंट में भेजे। उसकी माँ भी यह सब जानकर बहुत प्रसन्न हुई। कुछ समय पश्चात् सभी इस बात को भूल गए।

लगभग तीस वर्षों के बाद वही फोटोग्राफर फिर भारत आया। इस बार वह भयानक चेहरों के चित्र

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी व्याकरण (लोकोक्ति पर आधारित कहानी)

खींच रहा था। उसने जैल में जाकर कई क़ैदियों के चित्र लिए। जब उसके चित्रों की प्रदर्शनी लगी तो इस बार उसे 'सबसे भयानक' चित्र के लिए प्रथम पुरस्कार मिला। खोज करने पर उसने पाया कि यह डाकू वही बालक था जिसके लिए उसे तीस वर्ष पहले 'अति सुंदर चित्र' के लिए प्रथम पुरस्कार मिला था। फिर वह उसकी माँ से मिलने भारत आया तथा यह जानकर बहुत दुखी हुआ कि किस प्रकार बुरी संगत में पड़कर वह बालक एक डाकू बन गया था।

अतः हमें दुराचारी व्यक्तियों से सदैव बचना चाहिए। कुसंगति से बचना और सत्संगति में रहना ही हमारा ध्येय होना चाहिए। अच्छे व्यक्तियों की संगति में रहकर बुरे व्यक्ति उसी प्रकार सुधर जाते हैं जैसे पारस पत्थर के स्पर्श से निम्न श्रेणी की धातु का लोहा भी सोने में बदल जाता है। वाल्मीकि अपने प्रारंभिक जीवन में डाकू और लुटेरे थे। वे जंगल में कटार लेकर निकल पड़ते, जो भी राहगीर जंगल के रास्ते से गुजरता उसे वे लूट लेते थे। एक दिन जंगल के रास्ते से कुछ साधु जा रहे थे। डाकू ने चिल्ला-कर कहा- रुक जाओ, जो कुछ तुम्हारे पास सामान है, उसे मेरे हवाले कर दो। साधु बोले - ठीक है पहले तुम एक बात बताओ। जो तुम यह लूट-पाट करते हो, इस पाप को तुम क्यों करते हो? यह मेरा पेशा है। इससे मेरे परिवार का पालन-पोषण होता है। साधु बोले - तुम एक काम करो, घर जाकर अपने परिवार से पूछकर आओ कि क्या वे तुम्हारे इस पापकर्म के भागीदार बनेंगे? इस पर वह बोला- आप लोग मुझे धोखा देकर भाग जाओगे। तब



Scanned with CamScanner

कक्षा-आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी व्याकरण (लोकोक्ति पर आधारित कहानी)

उस डाकू ने उन साधुओं को एक रस्सी लेकर पेड़ से बाँध दिया और उन साधुओं के प्रश्न का उत्तर जानने के लिए घर की ओर चल दिया। घर पहुँचकर उसने अपने परिवार के सदस्यों से पूछा कि जो मैं यह पापकर्म करके धन लाता हूँ और आप सबका पेट पालता हूँ तो तुम मुझे बताओ कि कौन-कौन मेरे इस पापकर्म में भागीदार बनेगा? परिवार के सभी सदस्य बोले- हमारा पेट पालना आपका कर्त्तव्य है। आप चाहे जैसे काम करके हमारा पेट पालेंगे यह बात आप पर निर्भर करती है। लेकिन हम आपके पापकर्म में भागीदार क्यों बनें? इसप्रकार सभी ने इनकार कर दिया।

इस प्रकार जब वाल्मीकि ने अपने परिवार के सदस्यों का उत्तर सुना तो उसकी आँखें खुली की खुली रह गईं। वह दौड़ा-दौड़ा जंगल में साधुओं के पास पहुँचा और उनके चरणों में गिरकर क्षमा माँगने लगा। साधुओं ने आशीर्वाद दिया और 'राम' नाम जपने के लिए कहा। वह घर आकर 'राम' शब्द भूल गया और 'मरा-मरा' उलटा शब्द जपने लगा।

अंत में यही डाकू ऋषि वाल्मीकि के नाम से प्रसिद्ध हुए और उन्होंने वाल्मीकि रामायण की संस्कृत में रचना की। यह है संत्संगति का प्रभाव।

(ग) जैसे को तैसा

एक गाँव में एक सेठ-सेठानी रहते थे। सेठजी दिन-रात परिश्रम करके धन कमाते। वे बहुत बुद्धिमान भी थे। धीरे-धीरे उनके धनी होने की चर्चा होने लगी। पास के गाँव में ही एक चोर रहता था।

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी व्याकरण (लोकोक्ति पर आधारित कहानी)

जब उसने सेठजी के धन की चर्चा सुनी तो चोरी करने की युक्ति सोचने लगा। एक दिन वह साधु का वेष बनाकर सेठ जी के घर पहुँच गया और भोजन करने की इच्छा ज़ाहिर की। सेठ-सेठानी ने बड़ी श्रद्धा के साथ भोजन कराया। भोजन करने के पश्चात् साधु ने कहा कि आपके घर से लक्ष्मी अब रुष्ट होकर चली जाएँगी। मैं लक्ष्मी के वास के लिए पूजा करूँगा। तुम मुझे पूरा घर और तिजोरी रखने का स्थान दिखा दो, कल तैयारी के बाद पूजा करूँगा। सेठजी को शक होने लगा था परन्तु सेठानी की ज़िद्द पर उन्होंने साधु को पूरा घर दिखा दिया। अब सेठ जी के घर का सारा भेद चोर को पता चल गया। वह रात को सेठजी के घर चोरी करने पहुँचा। सेठजी जाग रहे थे। उन्हें चोर के आने का पता चल गया। उन्होंने चोर को सुनाते हुए सेठानी से कहा कि छोटी वाली कोठरी में सारे गहने तो रख दिए हैं न। फिर वे खर्राटे लेने लगे। चोर शीघ्रता से छोटी कोठरी में गया। सेठजी ने बाहर से कुंडी लगाकर चोर को कोठरी में बंद कर दिया और चोर को पुलिस के हवाले कर दिया। सेठजी ने चोर को पहचान लिया और कहा- जैसे को तैसा। जो जैसा करता है वैसा ही भरता है।

(घ) जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय।
बाल न बाँका कर सके जो जग बैरी होय।।

गिरिजा पहले मुम्बई में रहता था। एक दिन मैं अपने मामा के साथ मछली खरीदने गया, तब जिज्ञासा-वश मैंने उससे पूछा कि मुम्बई में तो उसे बहुत मछलियाँ मिलती मिलती होंगी, फिर वह मुम्बई छोड़कर इस छोटे से गाँव में क्यों आया? मेरे इस प्रश्न के उत्तर में जो कहानी सुनाई उससे मुझे ज्ञात हुआ कि गिरिजा मुम्बई

कक्षा- आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय- हिंदी व्याकरण (लोकोक्ति पर आधारित कहानी)

मैं अपनी पत्नी और एक बच्ची के साथ रहता था। वह रोज़ सुबह अपनी नाव में जाता और समुद्र में से बहुत सारी मछलियाँ पकड़ता। उन्हें बेचकर जो रुपए मिलते उनमें से कुछ का भोजन खरीदकर वह रोज़ पहले एक गरीब का पेट भरता। लोग उसे दुआएँ देते। अपने परिवार का भी वह पूरा ध्यान रखता। उसके आचरण के कारण उसके साथ के सब लोग उसकी सहायता करने के लिए हमेशा तैयार रहते।

एक दिन गिरिजा समुद्र में मछली पकड़ने गया। अचानक तूफ़ान आ गया। उसकी नाव डगमगा कर समुद्र में उलट गई। गिरिजा पानी में तैरने लगा, पर बहाव बहुत तेज़ था। लहरें उसे बहाए चली जा रही थीं।

धीरे-धीरे शाम हो गई। उधर गिरिजा की पत्नी दरवाज़े पर खड़ी उसकी राह देख रही थी। तूफ़ान की ख़बर सुनकर गिरिजा की पत्नी डर गई तथा उसकी सलामती के लिए भगवान से प्रार्थना करने लगी। उसकी बच्ची भूखी सो गई। रात बीत गई।

गिरिजा थक गया था, उसने देखा पेड़ की एक डाली तूफ़ान के कारण पानी में झुक गई है। उसने तुरंत डाली को पकड़ लिया और उसके सहारे किनारे पर आकर बेहोश हो गया। गाँव में ख़बर फैल गई कि उस दिन समुद्री तूफ़ान में सभी मछुवारों की मृत्यु हो गई। गिरिजा की पत्नी ने जब यह ख़बर सुनी तो उसका रो-रोकर बुरा हाल हो गया। उधर जब गिरिजा को होश नहीं आया तो कुछ राहगीर उसे अस्पताल ले गए। चार-पाँच दिन के बाद वह स्वस्थ हो गया और अपने घर चला गया। उसकी पत्नी गिरिजा को जीवित देख हैरान रह गई और ईश्वर का बार-बार धन्यवाद कर रही थी। तभी किसी ने कहा-" जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय।

(पृष्ठ-7)

कक्षा- आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी व्याकरण (लोकोक्ति पर आधारित कहानी)

बच्चो! अब मैं आपसे प्रश्न पूछूँगी। तीन मिनट का समय लेकर उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न-1 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' का क्या अर्थ है?

प्रश्न-2 'जैसे को तैसा' उक्ति को और किस ढंग से लिख सकते हैं?

इन पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं—

उत्तर-1 निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन जाता है।

उत्तर-2 'जैसे को तैसा' का अर्थ जो जैसे स्वभाव का व्यक्ति होता है उसे वैसा ही व्यवहार करने वाला व्यक्ति मिलता है। 'नहले पर दहला' दूसरे शब्दों कह सकते हैं।

बच्चो! इन लोकोक्तियों ध्यान से पढ़कर समझोगे और लिखोगे। यही आपका गृहकार्य है।

धन्यवाद।

(अन्तिम पृष्ठ-8)